माँ की तरह

माँ की तरह

भूपेन्द्र शर्मा

कौस्तुभ साहित्य शोध संस्थान
65/341 मानसरोवर जयपुर

समर्पित

पूज्य माँ को
जो आज भी मेरी स्मृतियो मे
जिन्दा है

■ भूपेन्द्र शर्मा

ये रग बिखेरते नाटक

कथ्य को सप्रषित करन म रगमचीय प्रस्तुति को निश्चय ही सर्वोपरि माना जा सकता है नाटय शेली मे सहज लोक भावन सवादो के द्वारा दिया गया सदेश रोचक एव स्वाभाविक स्वरूप मे दर्शक के हृदय पटल पर अकित हो जाता है इसीलिए यदि एकाकी विधा को साहित्य की सशक्त सपेषण वाली विधा मानी जाये तो अतिशयोक्ति नही

श्री भूपेन्द्र शर्मा ने अपनी पुस्तक मॉ की तरह मे सप्रेषण के इस धर्म का समुचित रूप से निर्वहन किया है। इन एकाकियो मे "वसुधैव कुटुम्बकम का परिचय करवाती ममतामयी मॉ है ता पर्यायरण की रक्षा मे सन्नध उद्यान रक्षक माली भवरे व तितलिया है जहा हास्य से साक्षात्कार करवाते इटरव्यू, डॉक्टर दात सिह एव बैंक के नजारे भरपूर मनोरजन करते है वही मृतक भोज के प्रति विरोध दर्ज करवाता स्वय मृत्यु अपनी सार्थकता सिद्ध करता है शुभम विवाह भवन्तु के माध्यम से मध्य भारत मे प्रचलित बाल विवाहो पर करारी चोट की गई है इस तरह पुस्तक मे सकलित सभी सातो एकाकी उद्देश्यपरक हैं तथा पाठको व दर्शको पर अमिट छाप छोडते हैं चूकि ये नाटक रगमचीय प्रतिभाआ की ऊर्जावान मेवाडी धरा पर रचे गये है इसीलिए उनमे स्वाभाविक रूप से यहा की भाषा–शैली एव सस्कृति परिलक्षित होती है क्षेत्रीय सास्कृतिकता का यह अखिल भारतीय पुट सर्वथा स्वागत योग्य है

श्री भूपेन्द्र शर्मा मेरे सहकर्मी एव मित्र हैं उनसे मेरी प्रथम भेट रगमच पर हुई थी एक सफल निदेशक व रगमचीय कलाकार के रूप मे बनी प्रथम पहचान आज भी मेरे मानस पटल पर अकित है उसे उनकी इस प्रथम प्रस्तुति "मॉ की तरह ने ओर भी अक्षुण्ण बना दिया हैं

रगमच के प्रतिभावान कलाकार श्री भूपेन्द्र शर्मा का यह सर्जन निसदेह एकाकी विधा मे स्वागत योग्य कदम है मेरा विश्वास है कि उनके नाटक पाठको/दर्शको को लुभायेगे गुदगुदायेगे तथा सार्थकता सिद्ध करते हुए यथार्थ के धरातल पर उन्हे कुछ कर गुजरने को उकसायेगे साहित्य एव रगमच जगत को उनसे बहुत सारी आशाए हैं सर्जन के इस मुकाम पर उनका स्वागत एव शुभकामनाए

रमाकान्त "कान्त"

अपनी ओर से

आज का पाठक उपदेशो से परहेज करता है यदि वही बात उसे शुगर कोटेड तरीके से कही जाये तो वह उसे स्वीकार कर लेता है रगमच पर सशक्त पात्र एव जन–मन लुभावन सवादो के माध्यम से कही गई वात अपनी अमिट छाप छोडती है दर्शक उपदेश को भी हृदयगम कर लेता है इसीलिए नाट्य शैली को एक सशक्त विधा के रूप मे रेखाकित किया जा सकता है

इस विधा की सर्वग्राह्यता ने मुझे बालपन से ही प्रभावित एव प्रेरित किया है फलस्वरूप मेरे कदम स्वत रगमच की ओर बढते चले गये अभिनय व निर्देशन का दायित्व निर्वहन करते हुए मैं स्वय एकाकी लेखन का लोभ सवरण नही कर सका इसी कारण "माँ की तरह" कृति के माध्यम से आपके सम्मुख प्रस्तुत हू

उक्त सकलन मे सात नाटक हैं मेरा प्रयास रहा है कि नाटक जनभाषा मे हो इसलिए पर्याप्त रूप से मेवाडी शब्दो का प्रयोग किया गया है कथ्य की रोचकता बनाये रखने के लिए व्यग्य व हास्यपूर्ण सवाद अवश्य लिखे गये हैं पर ऐसा करते हुए उद्देश्य को तनिक भी धूमिल नहीं होने दिया गया है इस प्रयास मे मैं कितना सफल हुआ हू यह प्रबुद्ध मच निदेशको पाठको व साहित्यविज्ञो की प्रतिक्रियाओ से ही ज्ञात हो सकेगा

पर यह सच है कि इन नाटको का सफल मचन किया जा चुका है इनके प्रथम मचन का श्रेय जाता है मेरे अभिन्न मित्र श्री देवेन्द्र कुमावत सस्थापक निदेशक जयदीप माध्यमिक विद्यालय भुवाणा को इस विद्यालय मे इन नाटको का अभिनीत होना उन्हे कसौटी पर परखने जैसा रहा यही कसौटी मेरे लिए एकाकी लेखन की सतत प्रेरणा स्रोत बनी रही

राजस्थान साहित्य अकादमी के प्रति कृतज्ञ हू जिन्होने एकाकी सग्रह को चयनित कर अर्थ सहयोग ही नहीं अपितु विशेषज्ञतापूर्ण सम्मति प्रदान की है आभारी हू बैंक मे कार्यरत मेरे अधिकारी साथी एव प्रतिष्ठित वाल साहित्यकार श्रद्धेय श्री रमाकान्त "कान्त" का जो इस एकाकी सग्रह की पाडुलिपि राजस्थान साहित्य अकादमी को विचारार्थ प्रस्तुत करवाने से लेकर पुस्तक प्रकाशन तक की प्रक्रिया मे प्रेरणापुज एव मार्गदर्शक रहे पुस्तक रूप मे इस एकाकी सग्रह को लाने का सम्पूर्ण श्रेय उन्हें ही जाता है डॉ भेरू लाल गर्ग के प्रति आभारी हू जिन्होने प्रोत्साहन व आशीर्वाद से मेरा लेखकीय मार्ग प्रशस्त किया पुस्तक के आवरण पृष्ठ व चित्र सज्जा का सुरुचिपूर्ण कार्य किया है नवोदित चित्रकार श्री रतन लाल लौहार ने निस्वार्थ भाव से प्रकाशन दायित्व निभाया है कौस्तुभ साहित्य शौध सस्थान ने लेसर टाईप सैटिग के लिए अकित कम्प्यूटर्स (श्री जितेन्द्र गौड श्री अरूण शर्मा) एव मुद्रण कार्य के लिए न्यू ट्रेक ऑफसेट प्रिन्टर्स (श्री विजय अरोडा) का अभूतपूर्व सहयोग रहा इन सवके कार्य के प्रति मै हृदय से आभारी हू

निरन्तर .. 2

मातृ–पितृ देवो भव उनको शतश नमन वे मेरे प्रथम एव अतिम देवता है उन्हे स्मरण न करना कृतघ्नता होगी स्वर्गीय माताश्री श्रीमती द्रोपदी देवी की ममतामयी प्रेरणा व शिक्षाविद् पिता श्री जितेन्द्र पाल शर्मा का वरद् हस्त मुझे प्रति पल नव–सृजन की ओर अग्रसर करता रहा अनुज धर्मेन्द्र शर्मा के अनुपम सहयोग एव प्रथम श्रोता–पाठिका सहधर्मीणी सुनीता के प्रति कतज्ञता ज्ञापन कर मैं अनौपचारिक सबधो को औपचारिक नही बनाना चाहता शिवा साहिल शुभम के प्रति क्या कहू ? उनकी बाल क्रीडाओ ने इन नाटको मे नाटकीयतापूर्ण योगदान किया है

स्टेट बैक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर जहा मैं नियोजित हू वहा के मधुर एव सौहार्दपूर्ण वातावरण के प्रति कतज्ञता ज्ञापित करता हू यदि वहा की कार्य स्थितिया अनुकूल नहीं होतीं तथा सहकर्मियो मित्रो का सहयोग नही रहा होता तो मैं इस प्रस्तुति योग्य नही होता इसके अतिरिक्त मै उन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हू जिनसे ज्ञात–अज्ञात सहयोग प्राप्त हुआ है

अन्त मे प्रस्तुत एकाकियो के मचन हेतु हर प्रकार के सहयोग के लिए मैं सदैव तत्पर हू पाठक इन्हे पढे और मचित करवाये उनके सुझावो एव प्रतिक्रियाओ की मुझे प्रतीक्षा रहेगी ताकि अपेक्षित सुधार किये जा सके

भूपेन्द्र शर्मा

अनुक्रमणिका

माँ की तरह

पात्र	परिचय
अहमद	एक भारतीय फौजी
फर्नाडिस	एक भारतीय फौजी
हरविंदर	एक भारतीय फौजी
इश्वर	एक भारतीय फाजी
बालक	पाकिस्तान की सीमा से भागकर आया 10 वर्षीय बालक
महिला	उक्त बालक की प्रोढ मॉ

विषय वस्तु भारत पाक सीमा पर चौकसी कर रही भारतीय फौज को अकस्मात पाकिस्तान क्षेत्र से एक बालक आता दिखाई देता है। इस बालक को ये फौजी सद्भावपूर्ण तरीके से व्यवहार करते हुए अपने विचारो से प्रभावित कर देते है। उस बालक को तलाश करती उसकी मॉ भी वही आ जाती है वह उन फौजियो का आभार व्यक्त करती है कि उन्होने उस बच्चे को कोई नुकसान नही पहुचाया। इसी बीच पाकिस्तान सीमा से युद्ध का अचानक आह्वान हो जाता है। लेकिन उक्त माँ उन्हे युद्ध न करने की अपील यह कहते हुए करती है कि ये हिन्दुस्तानी फोजी भी उसके लिए उसके स्वय के पुत्र के समान हैं अत इन भारतीय फौजियो पर हमला करने से पहले उन्हे माँ की लाश से गुजरना होगा। लेकिन पाकिस्तानी फौजी उसकी बात गभीरता से न लेते हुए गोली चला देते हैं। मॉ की मृत्यु के समय बिलखते बच्चे और मॉ के बीच सवाद मानवता प्रेम शाति और भाईचारे का सदेश देते है। यह एकाकी बधुत्व विश्व शाति और मानवता का सदेश देने वाली प्रेरक एकाकी है।

(दृश्य भारत पाक सीमा पर भारतीय फौजी मोर्चा वदी किये तैनात है दूर–दूर तक रेतीला मैदान है)

अहमद — मॉ कसम ! हिन्दुस्तान की हमारी इस धरती पर दुश्मन की अगर परछाई भी नजर आ गई तो उस परछाई के भी परखच्चे उडा के रख दूगा ।

हरबिदर — मगर परछाई पर निशाना लगाओगे तो तब न जब अहमद भाई कोई नजर भी आए। 25 दिन हो गये है इतजार करते–करते पर कोई नजर ही नही आता।

फनाडिस — थाडा आर सब्र करा ग्राहक ओर दुश्मन का कोई भरोसा नही हम फौजियो को तो अपनी डयूटी निभानी ही है।

ईश्वर — (दूरबीन से देखते हूए) श श श   सावधान फौजिया सामने से कोई आता दिख रहा है ।

हरबिदर — अबे किस गीदड की मौत आई है ईश्वर ? जो हमारे सामने आने की हिम्मत कर रहा है। अरे वाकई ये तो दुश्मन ही लगता है जो सीमा के उस पार से दौडा चला आ रहा है। फौजियो ! पोजिशन !!

(फौजी पोजिशन ले लेते है)

(सीमा के उस पार किसी बच्चे के दौडते हुए आने एव उसके रोने की आवाज तेज होती हुई)

ईश्वर — यह क्या ? ये तो किसी बच्चे के रोने की आवाज है।

अहमद — लगता है कोई मासूम बच्चा सीमा पार से अपनी ओर आ रहा है।

फर्नाडिस — अरे ये तो अपनी ओर बढे ही चला आ रहा है।

हरविंदर — फिर भी सावधान रहना जवानो इसमे भी दुश्मन की कोई चाल हो सकती है।

(लडका मच पर सैनिको के पास पहुचता है)

अहमद — ए लडके ! यहा क्या लेने आया है ? चल वापस लौट जा अपने ठिकाने।

(बच्चा सुबक–सुबक कर रोता ही रहता है बोलता कुछ नही)

ईश्वर — अबे सुनता है या गोली खाएगा ?

बच्चा — (थोड चुप होकर) गोली ? हा अकल अमको गोली कानी है अमने अम्मा से बोला हमे गोली दो ना हमे टोफी दो न तो अम्मा बोली खाने को रोटी तो है नही गोली कहा से दू, जा सरहद पार कर हिंदुस्तान जाके मर।

फर्नाडिस — ऐसे नही बोलते माई सन अभी मरने की बात नही करते। तुम्हारी जिदगी की तो ये शुरूआत है। (दूसरे फौजी साथियो से) लगता है बच्चा घर पर मा से झगड कर आया है। हम हेड साहब से बात करके इसे वापस भिजवाने की व्यवस्था करवा देगे। तब तक इसे यही बिठा लेते है। आओ माई सन यहा बैठो।

अहमद — (जेब मे से टॉफी निकाल कर देता है) लो पुतर लो गोली खाओ (बच्चा खुशी से ले लेता है) अच्छा ये बताओ पुत्तर तुम्हारे अब्बा क्या करते है ?

बच्चा — मालूम नही।

अहमद — और अम्मा ?

बच्चा — अम्मा बुनाई का काम करती है ।

अहमद	तुम यहा तक आ कैसे पहुचे ? तुम्हारे वतन मे किसी ने तुम्हे रोका नही ?
बच्चा	म तो चुपचाप छुपते–छुपाते यहा आ पहुचा हू। मैने सोचा देखू तो हिदुस्तान की जमी पर ऐसा क्या है जो हमारी जमी से अलग है।
हरविंदर	*अच्छा ? तो तुम्हे क्या अलग लगा ?*
बच्चा	कुछ भी तो नही । मुझे तो उस जमी और इस जमी मे कोई फर्क नही लगा। वैसी ही मिटटी है यहा भी वहा भी ।
ईश्वर	अबे हरविंदर ? इसको कुछ खिलाएगा– पिलाएगा भी कि केवल बाते ही बनाता रहेगा ?
सिख	हा पुतर हा पहले तू कुछ खा ल (खाना परोसते हुए) ये मक्का की रोटी और ये सरसो का साग।
बच्चा	शुक्रिया अकल आप लोग भी खाईये ना।
हरविंदर	हा हा हम भी खाएगे पुतर लो भाई लोगो लो खाना। (खाना खाने लगते हैं)
बच्चा	वाह सरदारजी अकल वाह आपका खाना तो बडा ही जायेकदार है।
ईश्वर	जायेकेदार क्यो नही होगा पुतर ? तेरे इन सरदारजी अकल के हाथो का बना जो है। ले ये अचार ले केरी का अचार मेरी माँ ने अपने हाथो से बनाया है।
बच्चा	अच्छा ? तो आपकी माँ कहा है ?
ईश्वर	अरे माँ तो हमारे गाव मे है हम तो यहा धरती मा की रक्षा के लिए आए है।
बच्चा	ये धरती माँ कौन है ?
फर्नाडिस	अरे तुम धरती माँ को नही जानते ? यही जमीन जहा हम बैठे खाना खा रहे है जो हमे खाने को अनाज देती है पीने का पानी देती है हवा देती है यही तो सबसे बडी माँ है।
बच्चा	तो क्या य माँ सबकी अलग–अलग होती है अकल? हमारे गाव के लोग कहते है ये अपनी जमीन है वो उनकी जमीन है।

अहमद — नही बेटे धरती तो सबकी एक ही है लेकिन बदकिस्मती से हम लोगो ने ही इस बाट दी है।

बच्चा — क्यो भला ? क्या हम एक ही जमीन पर बस कर एक साथ नही रह सकते ?

फर्नाडिस — क्यो नही रह सकते ? सारी दुनिया के लोग वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से प्रेमपूर्वक मिलजुलकर एक साथ रह सकते है।

(अचानक बच्चे की माँ की पुकार दूर से सुनाई देती है 'मोहम्मद–मोहम्मद' जो धीरे–धीरे तेज होती जाती है)

बच्चा — ये तो मेरी अम्मी जान की आवाज है लगता है वो मुझ ढूढती–ढूढती यहा आ पहुची हे। (माँ का प्रवश)

माँ — मोहम्मद ! मेरे लाल !! तुम कैसे हो ? तुम ठीक तो हो ना ?

(माँ बच्च को गले लगा लती है)

बच्चा — माँ मै बिल्कुल ठीक हू। ये फौजी बहुत अच्छे है। इन्होने मुझे खाना खिलाया है।

माँ — अच्छा ? (फौजियो से) आप लोगो का बहुत–बहुत शुक्रिया। मे ता समझ रही थी कि अब मेरे लाल का जिदा लौटना नामुमकिन ही है।

ईश्वर — ऐसा नही कहते माजी ! हम हिदुस्तानी मासूमो पर बेवजह हमला कभी नही करते ।

माँ — खुदा आपको सलामत रखे ! कितने भले लोग हे आप ! अच्छा अब हम सरहद पार फिर लौटना चाहेगे।

बच्चा — नही माँ मे नही जाउगा। मैं इन फोजी अकलो के साथ ही रहूगा ये मुझे बहुत अच्छे लगते है ।

माँ — नही बेटे नही तुझे क्या मालूम मे किस तरह से यहा तक पहुची हू। अब जिद छोड और लौट चल अपने गाव को।

बच्चा — (रोते हुए) नही मैं घर नही जाउगा मैं यही रहूगा।

(तभी सरहद पार से फोजियो की भारी भरकम टुकडी के आने की गडगडाहट सुनाइ दती है)

अहमद — लगता है दुश्मन की भारी सेना हमारी ओर आ रही है। फौजियो ! पोजीशन !!

अहमद — हरविन्दर जल्दी हेड क्वाटर पर दुश्मन के हमले का मेसेज करो।

(टैको की धडधड की आवाज चरमोत्कर्ष पर और फिर एकदम खामोशी)

(मा क्षण भर विचार कर तुरन्त दुश्मनो की ओर मुह कर खडी हो जाती है)

मा — (सरहद पार के दुश्मनो से) जग के दीवानो ! तुम्हे खुदा का वास्ता इन बेकसूर फौजियो पर हमला करने का ख्याल भी अपने जहन से निकाल दो । ये लोग जमीन की हद मजहब की दीवार खुदगर्जी के जज्बात इन सबसे बहुत ऊपर उठे खुदा के नेक बंद है।

(मच के पीछे दुश्मनो की तरफ से आवाज आती है)

पार्श्व स्वर — अरे बेवकूफ औरत ! दुश्मन सिर्फ दुश्मन होता है। तू हमारे बीच दीवार मत बन । हमे हमला कर दुश्मनो का सफाया करने दे।

माँ — (चीखते हुए) नही हरगिज नही तुम्हे इन तक पहुचने के वास्ते मेरी लाश से होकर गुजरना होगा । आखरी दम तक मै यहा से नही हटूगी।

पार्श्व स्वर — तू बेकार ही दीवानी हुई जा रही है तू हमारी माँ की तरह है तुझे खत्म करके हमे क्या मिलेगा ?

माँ — अगर मै तुम्हारे लिए माँ की तरह हू तो इन हिदुस्तानी फौजियो के लिए भी माँ ही हू जिन्होने मेरे बच्चे को दुश्मन का बच्चा होने के बावजूद छोटे भाई सा प्यार दिया। अगर तुम्हे माँ का ख्याल ही है तो दुनिया की सबसे बडी मा इस धरती के हुए टुकडो को जोडने की बात करो। क्या तुम्हे इस माँ के दर्द का एहसास नही ?

पार्श्व स्वर — बस बहुत हो चुकी तेरी बकवास। लगता है मजबूरन हमे तुझे खत्म करना होगा। हम तीन तक गिनती बालते है। अगर तू नही हटी तो पहले तेरे ऊपर गाली चलाएगे फिर दुश्मन पर।

मॉ मेरा फैसला अटल है क्योकि मै भी इस धरती मॉ की तरह ही एक ही जगह जमी हुई हू ।

पार्श्व स्वर (प्रतिध्वनित होता हुआ) एक दो तीन ।

(तीन कहते ही गोली चलती है मा वही ढेर हो जाती है तभी ऊपर स भारतीय हवाई जहाज की बमबारी से दुश्मनो के टेक उडा दिये जाते है जो कि पर्दे के पीछे ध्वनि प्रभाव से प्रस्तुत किये जाते है)

अहमद लगता है हमारा मेसेज काम आ गया और हमारे हवाई हमलो से दुश्मन का नामो निशान ही मिट गया।

ईश्वर जरा मॉ को सभालो हरविदर मॉ को।

लडका (रोते हुए) मा ! मॉ !! तुझे ये क्या हो गया मॉ ? तुझे ये क्या हो गया ?

हरविदर मॉ तूने हमारी खातिर अपनी जान की कुर्बानी दे दी।

मॉ (कराहते हुए) बेटे मॉ तो है ही कुर्बानी का दूसरा नाम। इस धरती मॉ को देखो। इन्सान ने नफरत और खुदगर्जी की वजह से इसके कितने टुकडे किये है कितना बाटा है कितना खून किया है फिर भी इस सबको यह बर्दाश्त करती है।

लडका लेकिन मॉ इस राव मे हम बेकसूरो का क्या गुनाह जिन्हे बेवजह ही ये दरिंदे मौत के घाट उतार देते है ?

अहमद मॉ हमे तेरी कसम इस नफरत की दीवार को गिराकर ही हम दम लेगे। लो ठीक से बैठो मॉ लो ठण्डा पानी पीओ।

मॉ बस बेटे ! अब मेरे चलने का समय आ गया है।

सभी ऐसा नही कहते मॉ।

बच्चा नही मॉ हमे अकेला छोडकर मत जाओ।

मॉं तुझे अकेला छोडकर नही जा रही हू मेरे बच्चे। ये फौजी भाइ तुझे इसानियत और भाईचारे का रास्ता दिखायेगे। चार–चार भाई तेरे लिए छोड कर जा रही हू । अच्छा खुदा हाफिज।

(बच्चा और सभी फौजी मॉ से लिपट –लिपट कर

रोते है)

ईश्वर — काश! तुम्हारी यह कुर्बानी दुनिया को अमन और इसानियत का एक नया पेगाम दे सबक दे। काश ! जग की बारूद की जगह इस आसमा से मोहब्वत के फूल बरसे।

(फौजियो की आखो के आसू मॉ पर बरसते है और बच्चा मॉ के सिरहाने रोता रहता है)

(धीरे–धीरे पर्दा गिरता है)

दरख्तों के दीवाने

पात्र परिचय

पात्र	परिचय
गुलमोहर	भवरे के रूप मे नन्ही बालिका
रातरानी	दूसरे भवरे के रूप मे नन्ही बालिका
कोरस	चार भवरो के रूप मे बालक
मालीराम	बाग का प्रोढ माली
चमेली	भवरे के रूप मे बालिका
बरैया	बैरेया के रूप मे बालक
चिनी	एक नन्ही 7–8 वर्षीया बच्ची
मिनी	एक नन्ही 7–8 वर्षीया बच्ची
क	एक लकडहारा
ख	एक लकडहारा
ग	एक लकडहारा
घ	एक लकडहारा

विषय वस्तु – कटते हुए पेडो और उपेक्षित बाग बगीचो के प्रति बच्चो का ध्यान आकर्षित करते हुए उन्हे पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने का इस नाटिका मे प्रयास किया गया है। भवरा और बैरेया की भूमिका से नाटक को विषय–सगत बनाते हुए **मालीराम** को सूत्रधार के रूप मे प्रस्तुत कर पर्यावरण के प्रति जन–जन को जागरूक बनाने का सदेश नाटिका मे समाहित है ।

(दृश्य   एक बगीचे का जहा गुलमोहर आम नीम आदि पेडो के अलावा फूलो की कतारे सजी है वही कोने मे एक माली मालीराम पेडो की साज सवार कर रहा है। पर्दा खुलते ही दोनो तरफ से तीन–तीन बच्चे भवरो के रूप मे प्रवेश करते है उनकी स्वर लहरी पर्दे के पीछे से ही सुनाई देती हे)

सभी भवरे	झूम झूम । झूम झूम ।
गुलमोहर	बाये झूम ।
रातरानी	दाये झूम।
गुलमोहर	दाय झूम । बाये झूम ।
रातरानी	अपना जहा है
गुलमोहर	अपनी फिजा हे ।
रातरानी	जहा मे घूम ।
गुलमोहर	फिजा म घूम ।
कोरस	जहा मे घूम । फिजा मे घूम ।
	बाये घूम दाये घूम ।
गुलमोहर	फूलो सा फूलो ।
रातरानी	झूलो सा झूलो ।।

कोरस फूलो को चूम । पत्तो को चूम ।।
वाये को घूम । दाये को घूम ।।
गुलमोहर डाली पे झूलो ।
रातरानी माली को भूलो ।
गुलमोहर वगिया मे झूम ।
रातरानी नदिया म झूम ।
कोरस वाये झूम । दाय झूम ।
मालीराम (आवेश म) वस। वस। वस। वहुत हो गया तुम्हारा झूमना घूमना चूमना । सुनो भवरो । आज से इस वगीचे मे तुम्हारा आना वद । चलो । जिस रास्ते आए हो उसी रास्ते लौट जाओ ।
गुलमोहर अरे मालीराम । भला आज तुम्हे क्या हो गया है ? रोज तो तुम हमे देखकर वहुत खुश होते थे ।
रातरानी हा मालीराम । आपने पहले तो कभी हमे इस वगीचे मे आने से मना नहीं किया । फिर आज अचानक आपको ये क्या हो गया है ?
चमली (धीरे से) लगता ह आज सुवह–सुवह मालीराम का *अपनी घरवाली स झगडा हो गया हे ।*
(दूसरे साथी हसने लगते है।)
मालीराम वकवास वद करो । तुम लोगो ने सुना नही ? मै कहता हू आज से इस वगीचे के दरवाजे तुम लोगो के लिए वद । चलो दफा हो जाओ यहा से ।
गुलमोहर अरे मालीराम । हम नादानो से भला क्यो नाराज होते हो ? तुम कहते हो तो हम यहा से चले जाएगे। लेकिन जाने स पहले हम इतना तो वता दीजिए कि आखिर हमसे गलती क्या हुई है ?
मालीराम तुम क्या गलती करोगे मासूम भवरो ? गलती तो कर रहा है यह सम्पूर्ण मानव–समाज।
गुलमोहर मानव–समाज ? भला वो कैसे ?
मालीराम तुम्ह क्या वताऊ गुलमोहर । आज का मानव इस प्रकृति इस हरियाली के प्रति बहुत क्रूर हो गया है । ये हरे–भरे पेड–पौधे जो उसे जीवनदायी हवा देते है उन्हे वह पेरो तले रोदने मे लगा है । जगल कट

	रहे हे । पेडो की जगह अब मकान बनने लगे है। ये खूबसूरत धरती अब बजर होने लगी है।
चमेली	बात तो तुम्हारी सौ टके सही ह मालीराम । पेड–पौधो की कमी से हम भवरो का आकाश मे उडते पछियो का धरती के जीव –जन्तुओ का जीना ही मुश्किल हो गया हे । लेकिन इसमे भला हमारा क्या कुसूर हे जो तुम हमे इस बाग से ही निकाल रहे हो ?
मालीराम	तुम्हारा कुसूर है तुम्हारी उदासनीता। यह सब देखकर भी तुम लोग आख मूदे बैठे हो । पर्यावरण के बिगडते हालात तुम्हारे सामने है । फिर भी तुम खामोश हो कुछ भी कर नही रहे हो।
चमेली	हम भला क्या कर सकते हे मालीराम ? हम तो छोटे –छोटे से उडने वाले भवरे मात्र हे ।
मालीराम	तुम बहुत कुछ कर सकते हो भवरो बहुत कुछ। कहा भी तो गया है – सतसैया के दोहरे ज्यो नाविक के तीर देखने मे छोटे लगे घाव करे गभीर । सुनो । इसके लिए मै तुम्हे बडा ही मजेदार और असरदार आइडिया देता हू। सुनो चमेली। ये स्कीम मे तुम्हे धीरे से कान मे सुनाता हू। (मालीराम चमेली के कान मे स्कीम समझाता है)
चमेली	(खुश होकर) वाह। क्या मजेदार स्कीम है । क्यो न इस काम मे हम बरेया भैया और ततैया दीदी को भी साथ ले ले । (आवज देती है) बरैया भैया । ओ ततैया दीदी ।
बरैया–ततैया	(बरैया–ततैया का प्रवेश) कहो चमेली। हमे कैसे याद किया ?
चमेली	ऐसा है दीदी और भैया । हम लोग पर्यावरण के दुश्मनो के खिलाफ एक बहुत ही जोरदार जग छेडने जा रहे है। क्या इस प्लान मे तुम भी हमारा साथ दोगे ?

बरैया — क्यो नही बाबा ? लेकिन तुम यह तो बताओ कि आखिर तुम्हारा प्लान क्या है ?

चमेली — शि शि (चुप करते हुए) धीमे बोलिए दीवारो के भी कान होते है। सारा प्लान अभी समझा देती हू। (कान मे प्लान समझाती है) तो कोमरेड तैयार हो ना ? चलो इसान आ ही रहा होगा । हम सब अपना-अपना मोचा सभालते है।

(दो बच्चियो का आगमन) (नाम-1 मिनी एव 2 चिनी)

दो बच्चिया — (गीत गाते हुए) टूम्बक टुम भई टुम्बक टुम।
फूल बिना ये क्या जीवन । (दोहराती हैं)

मिनी+चीनी — देखो रग -बिरगे।

चीनी+मीनी — देखो फूल तिरगे।

दोनो — टुम्बक टुम भई टुम्बक टुम

मीनी — तोडे फूलो को हम तुम

चीनी — फिर हो जाए हम तुम गुम

दोना — टुम्बक टुम भई टुम्बक टुम
(फूल तोडने का प्रयास करते हुए)

दाना — तोडे फूलो को हम तुम
फिर हो जाए हम तुम गुम ।
(गाते हुए जैसे ही फूलो को तोडने लगती है वैसे ही भवरे बरैया ततैया उन्हे काट लेते है।)

मीनी — (भय से चिल्लाकर) अरे चीनी मेरे ऊपर तो ये भवरे मडराते ही जा रह हैं ।

चीनी — अरे मीनी। इस बरैया ने तो मुझे काट डाला ।
(दोनो भागती है)

मीनी — अरे बाप रे मुझे बचाओ ।

चीनी — हे भगवान । मैं तो मर गई रे । मुझे बचाओ रे।
(दोनो बचाओ-बचाओ करती हुई मच से भागती हे ततैया-भवरे आदि उनके पीछे हमला बोलते रहते हे अतत व दोनो हारकर मालीराम की शरण मे आती है)

मीनी — अरे माली अकल। हमे माफ कर दो। हमे इन ततैया से बचाओ।

चीनी	हा माली अकल अब हम कभी ऐसी गलती नही करेगे ।
मालीराम	हू । अब समझा । आज फिर तुम लोग फूल तोडने यहा आये थे ।
मीनी	अब हम कभी फूल नही तोडेगे । बस हमे उन भवरा और बरैयो से बचा लो ।
मालीराम	हू। तो आज आपको सबक मिल ही गया है। देखो बच्चो । ये फल भी तुम लोगा की तरह ही प्यार–प्यार और मासूम होते है। इनमे कभी नन्ही सी जान बसी होती है । बोलो अब कभी तो फूलो को नही तोडेगे ?
चीनी	फूल तो क्या अकल हम कोई कली कोइ पौधा कोई पत्ती तक अब नही तोडगे।
मीनी	तोडना तो दूर अब हम जहा खाली जगह देखगे वहा नये–नये पौधे नये–नये पेड नये–नये बीज बोकर इस धरती पर रग–बिरगे फूल उगाएग । आपके इस बगीचे को भी हम सजाएगे ।
मालीराम	चलो । खुदा का शुक्र है कि तुम लोग सुधर गए हो। भगवान ऐसी सद्‌बुद्धि दुनिया के सारे बच्चो को दे। अब तुम जा सकते हो ।
मीनी व चीनी	थक यू मालीराम । बाय–बाय ।

(मीनी व चीनी गीत गाते है)

टुम्बक टुम भई टुम्बक टुम
फूलो का ना तोड हम
पौधो को ना छेडे हम
बगिया नही उजाडे हम
टुम्बक टुम भई टुम्बक टुम ।।

(गाते हुए प्रस्थान)

लकडहारे	(चार लकडहारो का कुल्हाडी लेकर प्रवेश)
गीत गाते है	झिगोलाला झिगोलाला हुर्र–हुर्र झिगोलाला झिगोलाला हुर्र–हुर्र पेडो को हम काटग लकडी मिलकर बाटेगे।

हुर्र हुर्र झिगोलाला झिगोलाला
पेड काटो पेड काटो पेड काटो रे ।
पेड काटो पड काटो पड काटा रे ।।

क	वाह क्या लम्बे चोडे हट्टे कट्टे पेड है ।
ख	हा हरे-भरे वडे-वडे कितने अच्छे पेड है ।
ग	तो चलो उठाओ कुल्हाडी।
घ	हा चलो काटो डाली।
	(लकडहारे जैसा ही पेड काटने का अभिनय करते है भवरे उन पर हमला वोल देते है)
क	अरे वाप रे ये तो वरैया है ।
ख	हा ये तो हमे काट रहे है ।
ग	चला जान वचा के भागो यहा सेे ।
घ	हा कुल्हाडी छाड के भागा यहा स ।
मालीराम	अरे भागते कहा हो। ठहरो । मै एक एक की खवर लेता हू।
क	अरे ये तो यहा का माली लगता है।
मालीराम	हा मैं यहाँ का माली -- 'मालीराम ।
ख	अरे मालीराम जी (दण्डवत होकर) हम आपक पर पडते है। हमे इन भवरो और ततेयो से वचा लो। (सभी दण्डवत होते है)
सभी	हा इन भवरा से वचा लो । इन सव वरैया से वचा लो।
मालीराम	ठीक है वचाता हू वचाता हू। लेकिन क्या तुम यह भी जानते हो कि ये तुम्ह काटने क्यो दौड रहे हैं?
क	हा जानते है। क्योकि हम पेड काट रहे थे।
मालीराम	ठीक जाना तुमने। ये लोग पेडो के रखवाले है इन सुन्दर दरख्तो के दीवाने हैं। अगर तुम पेड काटने की कोशिश करोगे तो ये भी तुम्हे बिना काटे नही रहने देगे।
	(क ख ग व घ चारा एक साथ कान पकडकर दण्ड वैठक लगाते है) (क ख ग व घ चारो एक साथ)

अव हम कभी पेड नही काटेगे
अव हम कभी पड नही काटेगे ।

चीनी	हा माली अकल अ करगे ।
मालीराम	हू । अब रामआ । यहा आये थे ।
मीनी	अब हम कभी फूल और बरैया से बचा
मालीराम	हू। तो आज आपव बच्चा । ये फूल प्यारे-प्यारे आर मा जान बसी हाती है, नही तोडेगे ?
चीनी	फूल ता क्या अकल पत्ती तक अब नही
मीनी	तोडना तो दूर अब नये-नये पौधे नर इस धरती पर रग- बगीच का भी हम र
मालीराम	चलो । खुदा का हो। भगवान ऐसी र दे। अब तुम जा सब
मीनी व चीनी	थेक यू मालीराम । (मीनी व चीनी गीत टुम्बक टुम भ फूला को ना पौधो को ना बगिया नही र टुम्बक टुम भई (गाते हुए प्रर
लकडहारे गीत गाते है	(चार लकडहारो का कुल झिगोलाला झिगोलाला झिगोलाला झिगोलाला पेडो को हम काटेगे लकडी मिलकर बाटेगे।

क ख ग घ ड़ तो हम आपका सपना साकार करेंगे । ये हमारा संकल्प है ।

गीत (चारों गाते हैं)

सपना हम साकार करेंगे
धरती मां की गोद भरेंगे ।
पेड़ों से ये धरती तो क्या
पेड़ों से आकाश भरेंगे ।

(यह गीत दोहराते हुए सभी प्रतिभागी मंच की दाहिनी ओर प्रस्थान करते हैं)

(पटाक्षेप)

मालीराम — चलो अब मै जो तुम्हे प्रतिज्ञा करवाता हू, उसे दोहराना –

कट जाएगे खुद
पर पेडो को ना काटेगे
सृष्टि का उपहार
हम सब मिलकर बाटेगे ।
(चारो प्रतिज्ञा दोहराते है)

क — हम इन नन्हे–नन्हे भवरो और बरैयो के सम्मुख नतमस्तक है जिन्होने हमारी आखे खोल दी है ।

ख — जिन्होने हमे जताया है कि पैड–पौधो को नष्ट करके हम जीवन को नष्ट कर रहे है ।

ग — पर्यावरण को नष्ट कर रहे है

घ — धरती के स्वर्ग को नरक कर रहे है ।

मालीराम — चलो देर आये दुरस्त आये । अब तो सबने मान लिया ना कि पेडो को काटना कितना नुकसानदायक और खतरनाक भी है ?

क — बिल्कुल मालीराम जी। अब तो हम इस काम से तौबा करते है ।

मालीराम — लेकिन सिर्फ तौबा करने से काम नही चलेगा। आपको उन सब कृत्यो के लिए पश्चाताप भी करना पडेगा जो आपने आज से पहले किये है।

क — हा। आज से पहले तो हमने न जाने कितने पेड काट डाले है। तो आप ही हुक्म कीजिए कि हमे क्या करना पडेगा ?

मालीराम — आपको जन चेतना जगानी होगी। हर शहर हर गाव हर गली हर मोहल्ले मे पेड लगाने के महत्त्व का प्रचार करना होगा और पर्यावरण के बढते खतरे से जनता को वाकिफ कराना होगा ।

ख — समझ गए मालीराम । हम अब ऐसा कार्यक्रम तैयार करेगे जिससे सारी धरती हरियाली से झूम उठे और इस कार्य के लिए प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर पर कार्य करे ।

मालीराम — (गहरी सास लेकर) हा यही मेरा सपना है।

क ख ग व घ   तो हम आपका सपना साकार करेगे । ये हमारा सकल्प है ।

गीत   (चारो गाते है)

सपना हम साकार करेगे
धरती मा की गोद भरेगे ।
पेडो से ये धरती तो क्या
पेडो से आकाश भरेगे ।

(यह गीत दोहराते हुए सभी प्रतिभागी मच की दाहिनी ओर प्रस्थान करते है)

(पटाक्षेप)

पात्र परिचय

पात्र	परिचय
प्रधानाध्यापिका	साक्षात्कार लेने वाली एक युवती
व्यक्ति	एक मनचला युवक जो साक्षात्कार देने आया है।

विषय वस्तु साक्षात्कार मे यदि असगत प्रश्न पूछे जाये एव उसका प्रत्युत्तर देने वाला भी यदि गभीर न हो तो ऐसी स्थिति मे उत्पन्न हास्य प्रस्तुत करने वाली यह हास्य प्रधान एकाकी है।

(मच पर एक पधानाध्यापक के कक्ष का दृश्य)
(प्रधानाध्यापिका फाइल दखती हुई अपनी कुर्सी पर वैठी हे)

प्र (घटी वजाते हुए) यस । नक्स्ट केडीडेट ।
(सुनते ही एक अस्त–व्यस्त व्यक्ति का प्रवश)

व्य जी जी जी आपने मुझे बुलाया ?

प्र यू इडीयट । य कोई चपडासी का इण्टरव्यू नही हो रहा है। मैंने नेक्स्ट केडीडेट बुलाया हे। चपडासी नही।

व्य जी जी जी वो मे ही हूँ।

प्र क्या तुम ? तुम ही हो ? अच्छा वेठिये (उक्त उम्मीदवार कुर्सी की ओर बढता हे मगर गिर जाता है)

व्य सो सो सोरी मेडम – वा क्या है कि ये कुर्सी ।

प्र क्यो ? क्या हुआ कुर्सी मे ? क्या स्प्रिंग लगी है ?

व्य नही नही । वो वात नही है । वो क्या हे कि मुझे इस कुर्सी पर वैठते ही ऐसा लगा ऐसा लगा ।

प्र केसा लगा ?

व्य मानो मै राज सिंहासन पर बैठ गया हूँ। सैकडो दासिया मेरा पखा झल रहे है । और मेरी खूबसूरत बेगम मेरे इतजार म ?

प्र ओह ! तो आप दिन मे भी सपन देखते है।

व्य जी ! तारीफ के लिए धन्यवाद ।

प्र अच्छा ! तो आप अपना नाम बताइये ।

व्य जी ! मै मेरा नाम ।

प्र हा ! हा म आपका ही नाम पूछ रही हूँ – आपके अडोसी–पडोसिया का नही।

व्य जी मेरा नाम मेरा नाम मुझे शरम आती है। (शरमा जाता है।)

प्र कमाल है ! आपको अपना नाम बताने मे शम आ रही है ?

व्य नही नही वो बात नही है । अच्छा ये बताइये म अपना नाम अग्रेजी मे बताऊ या हिंदी मे ?

प्र अरे बाबा ! आप दोनो मे ही बता दीजिये।

व्य जी मुझे हिंदी मे चन्द्रप्रकाश और अग्रेजी मे मून लाईट कहते है।

प्र अच्छा ! आपकी एज्यूकेशन ?

व्य जी मैने इगलिश मीडियम से हिंदी म एम ए किया है।

प्र अच्छा ! चलिये अब आपसे कुछ सवाल पूछे जाये। हा तो क्या आपको मालूम है आलू का विलाम शब्द क्या है ?

व्यू ये तो बहुत आसान सवाल है। आलू का विलोम है कद्दू।

प्र अब बताइये सब्जी बाजार का उल्टा ?

व्य ये तो और भी आसान है । बापू बाजार।

प्र हा ! तो अब आप कुछ मुहावरा का वाक्यो मे प्रयोग कीजिये। पहला मुहावरा है – भैस के आगे बीन बजाना।

व्य अब क्या बताये मेडम। अपनी श्रीमतीजी को चाहे कितना कहो कि महगाई का युग ह ऐरे–गेरे खर्चे मत करो। श्रृगार म चूना मत लगाओ। चार पैसे बचाओ । मगर श्रीमतीजी कही मानने वाली है ? वो ही बात हो गई ना भैस के आग बीन बजाना।

प्र हू ! अब बताइये सिर मुडाते ही ओले पडे।

व्य आज से 1 साल 6 माह 12 दिन और 9 घटे पहले की बात

है। मेरी दादी मा का स्वगवास हुआ था। (राते हुए) मने अपना सिर मुडवाया सिर मुण्डवाकर लौटा तो देखा कि घनघोर वारिश हो रही है। ओले वरस रहे ह। वो ही वात हुई ना सिर मुडाते ही ओले पडे।

प्र अच्छा अव वताइगे करेले पर नीम चढा ।

व्य हमारी श्रीमतीजी को करले वनाने का वडा शाक है । एक दिन की वात है । श्रीमती जी ने कडवी–कडवी करेल की सब्जी वनाई उस पर हम सारे–सारे भजन सुनाने लगी। अव आप ही वताइये करेले पे नीम नही चढा तो क्या हुआ ?

प्र वहुत खूव–वहुत खूव । अच्छा अव य वताये क्या इससे पहले कही और आप काम कर रहे थे ?

व्य हा हा मैने म्याऊ–म्याऊ नाटक क मे जोकर का रोल किया था।

प्र अच्छा !

व्य हा और मै वताऊँ। मेने एक फिल्म म भी काम किया है – "झुमरी तलैया ।

प्र क्या आप कोई रोल करके वतायग ?

व्य हा हा मैने "झुमरी तलेया फिल्म मे नेता का रोल किया था। देखिये उसी का रोल करके दिखाता हूँ। (नेता के भाषण का अभिनय करता है)

प्र वहुत अच्छे ! अव अन्त मे एक सवाल ओर। हमारे यहा हम जिसे भी काम देते है उसे एक नो ओब्जेक्सन सर्टिफिकेट देना होता है।

व्य जी ये नो ओब्जेक्सन सर्टिफिकेट क्या होता है ?

प्र अजी यह एक प्रकार का ना आपत्ति प्रमाण पत्र होता है। इसमे आपकी पत्नी से यह लिखवाना होगा कि आपकी यहा सर्विस से उन्हे कोई आपत्ति नही होगी।

व्य जी श्रीमती जी से ? एक मिनिट एक मिनट मे आया ।

(व्यक्ति का भागते हुए प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

पात्र परिचय

पात्र	परिचय
डॉक्टर	दाँतसिह नामक स्थूलकाय अप्रशिक्षित दत चिकित्सक
असिस्टेट	डॉक्टर का सहयोगी पुरूष
चौकीदार	डॉक्टर के दवाखाने पर खडा युवा दरवान
मियाभाई	दतरोग से पीडित एक बुजुर्ग मुसलमान पुरूष
पेशेट–अ	डॉक्टर को अपना दात दिखाने आया रोगी
महिला	डॉक्टर को दात दिखाने आई एक युवती
पडितजी	डॉक्टर को दात दिखाने आया एक प्रोढ पेटू पडित
हकडूमल	हकलाने वाला एक दत रोगी

विषय वस्तु – *एक अनाडी व्यक्ति के दत चिकित्सक बन बैठने* के कारण उसकी चिकित्सा से पीडित हो रहे रोगियो का चित्र प्रस्तुत करते हुए ऐसे डॉक्टर को पीडित रोगिया द्वारा ही सबक सिखाने वाली यह एकाकी हास्य प्रधान एकाकी है

(दृश्य दवाखाने के बाहर मिया फारूखी साइनबोड पढते हुए)
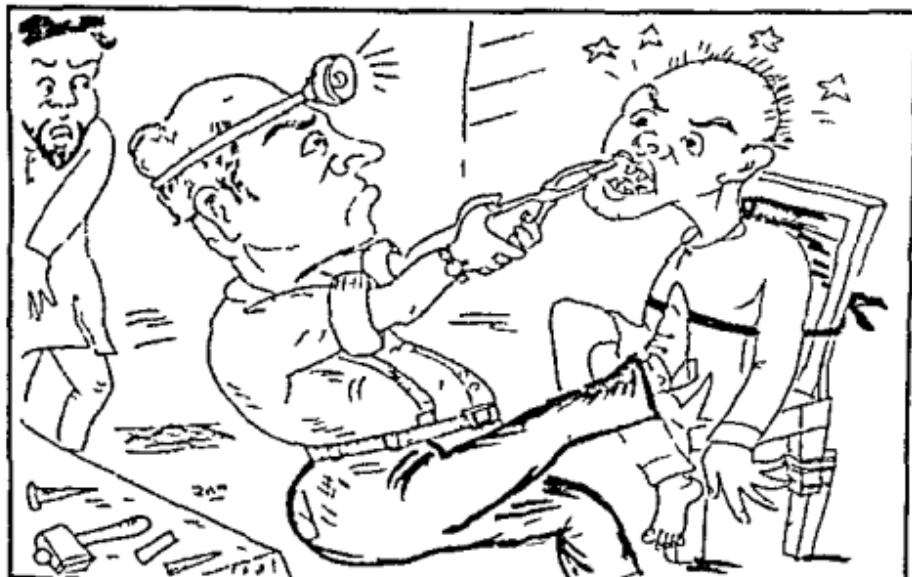
मिया — ता ये लिखा है दॉत सिह का दवाखाना यहा नायाब तरीको से दातो का इलाज किया जाता हे (मुह मे पान चबाते हुए) अए फीस गेर मामूली एक बार सेवा का मौका जरूर दे डॉ दात सिह बी ए कुश्ती लिट्रेचर पास एम ए जूडो कराटे दातो के करामाती इलाज का पोने एक साल छ माह तीन दिन बाईस घटे चालीस मिनिट ओर साढे तीन सेकिण्डस का लम्बा अनुभव (पुन स्वय ही) वाह भई वाह अमा क्या बाट (बात) है लगता हे ऐसा अस्पताल शहर मे पहली बार खुला है नालायक दातो ने तो हमे भी तमाम उम्र दु खी ही रखा है (गहरी सास लेकर) ह कमबख्त कोई डॉक्टर इनकी ठीक से मरम्मत ही नही कर पाया। चलो आज इस अस्पताल को ही आजमा लिया जाये (अन्दर प्रवेश करते हुए)

चौकीदार — अरे मिया भीतर तो ऐसे घुसे आ रहे हो जैसे शेर के मुह मे खरगोश का शिकार ।

मिया क्या कहा शर क ?

चौकीदार नही–नही मिया मे कह रहा हू कि सीधे अन्दर ही चले आओग या टिकट भी कटवाओगे ?

मिया टिकट ? किसका टिकट भई हम कोई नौटकी का खेल देखने थोडे ही आए है जो पहले टिकट लेना पड ।

चौकीदार अरे मिया भाई ये तो हम भी जानते है कि तुम खेल देखने को नही खेल बनने को यहा आये हे। लेकिन तुम्हे मालूम तो होना चाहिए कि जे (ये) डॉक्टर दात सिह का दत चिकित्सालय हे यहा दात तुडवाने के लिय अहह मरा मतलव हे कि दात दिखवाने के लिये पहले नम्बर लगवाने पडते है नम्बर

मिया नम्बर केसा नम्बर ?

चौकीदार मिया उतय देखो उतय शीशे के पल्ली ओर । सभी लोग जो वैच पर अपने–अपने दात पकडकर अह मेरो मतलव है कोई ठोडी पकडकर वैठे हैं तो कोई ईलाज के वाद लुढके पडे है कोई ओधे पडे है ई सभी नम्वर से ही वेठे पशन्ट हे। इसलिए पहिले निकालो वीस का नोट और हमस कटवाय लियो टिकट फिर हम तुम्हे भीतर घुसन देगे हा।

मिया या अल्लाह या मेरे खुदा क्या जमाना आ गया है। हर जगह एट्रेस फीस। अब तक हमने बड–बडे दफ्तरो मे यह सिस्टम देखा था अव देखते है तो कमबख्त हस्पताल मे भी इस रोग के कीटाणु लग गये है ये लो वीस का नोट ।

चौकीदार अजी ही ही ही वस इतनी सी ही तो बात है जी ओर नवाब साहब आप तो खामाख्वाह नाराज हुए जा रहे ह आइय आइये नवाब साहब भीतर तशरीफ ले आईये।

मिया (वडबडाते हुए) ह भीतर तशरीफ ले आईये वीस का नोट हाथ म आते ही मिया से नवाब साहब बना दिया वरखुरदार ने (भीतर हथोडे और छैनी वजन की आवाज इन औजारा स रोगी के दात तोडने व

कराहने चिल्लाने की आवाज अरे बाप रे अरे मर गया रे चिल्लाने का स्वर) अरे ये कहा आ गया मैं? कही किसी बस एक्सीडेट के घायल तो यहा आके भर्ती नही हुए ह ?

डॉक्टर जी नही ये बस एक्सीडेट के नही ये सब हमारे दवाखाने के मरीज है।

मिया क क क्या मतलब ?

डॉक्टर मतलब ये बरखुरदार कि इन सबका ईलाज हम किया है हम (पृष्ठ मे कराहने रोने चिल्लाने की आवाज)

मिया (घबराते हुए) क्या इलाज के बाद इनकी ये हालत हुई है ?

डॉक्टर इसम हालत की क्या बात है ? जानते नही ? ये डाक्टर दॉत सिह का दवाखाना है ये वो डॉक्टर है जो बी ए कुश्ती ओर एम ए जूडो कराटे है समझे ? और इधर जो छ लोग बैठे हैं ना उनका ईलाज हम पेशल टेकनिक स किया है और इधर जो सात लोग बैठे है उनका ईलाज करना अभी बाकी है तुम्हारा नम्बर आठवा है चलो लाईन मे लग जाओ ।

मिया (बडबडाते हुए) लाईन मे लग जाओ भाई कमाल है हम कोई राशन की दुकान पर घासलेट खरीदने आये है जो लाईन मे लग जाय ?

डॉक्टर अबे ज्यादा बड बड करोगे तो दॉतो के साथ–साथ जीभ भी बाहर निकाल देगे । जानते नही ? हम डॉ दात सिह है डॉक्टर दात सिह । चलो अगला पेशेन्ट। (मिया मरीजो की लाईन मे बैठ जाता है)

पेशेन्ट –अ नमस्कार डॉक्टर साहब नमस्कार ।

डॉक्टर हा नमस्कार । पहली और आखिरी बार भगवान को याद कर लो ।

पेशेन्ट –अ क क क्यो डॉक्टर साहब ?

डॉक्टर भईया हमसे इलाज करवाने आये हो मजाक समझी है क्या ? बालो क्या तकलीफ हे ?

पेशेन्ट –अ	डॉक्टर साहब मेरे ये नीचे वाला दात बहुत दर्द कर रहा है ।
डॉक्टर	हम तुम्हारा दर्द अभी जड से खत्म किये देते है। एसिटेट । (असिस्टेट) हमारी हथोडी ओर छैनी देना तो।
असिस्टेट	यस सर ये लीजिये सर ।
पशन्ट–अ	अरे र ये क्या कर रहे हो मै कोई पत्थर की मूर्ति हू जो हथोडी ओर टाची से दात निकाल रहे हो।
डॉक्टर	चोप हमे अपना काम करने दो। जितना कहे उतना करत जाओ। तभी अच्छा ईलाज हा सकेगा। चलो मुह खोलो।
पैशेन्ट – अ	(घबरा कर रोता है) बु बु बु डॉक्टर साहब मुझ माफ कर दो मरा दर्द ठीक हा गया। मुझे छोड दो डॉक्टर साहब मे आपके हाथ जोडता हू, पाव पडता हू मुझे अपना दात नही तुडवाना है।
डॉक्टर	चोप एक शेर छाप घोसा दूगा तो सारी बत्तीसी बाहर निकल आएगी समझे ? बोलता है मेरा दात दर्द ठीक हो गया असिटट इसके दाना हाथ पकडके मुह खोल दो (असिटेट स्वय का मुह खोलता है) अबे अपना नही पेशेट का मुह खोलो (मरीज दर्द स चिल्लाता ह)। हा हा हा जितना ज्यादा पेशेट चिल्लाता हे उतना ही ज्यादा उसका ईलाज करने मे हमको मजा आता है। हमका इसका दात निकालना मागता ह।
पेशेट	(गिडगिडाते हुए) अ अ मै बेमौत मर जाउगा डॉक्टर साहब।
असिस्टेट	ऐ चुपचाप बैठा रह। डॉक्टर साहब अभी अपनी कलाबाजी दिखात है ।
पेशेटश	आह आह आ ई ! (डॉक्टर पेशेट–अ का दात निकाल लेता है)
डॉक्टर	बस बस ये ये निकल गया तुम्हारा दॉत वाह कितना खूबसूरत और चमकीला है तुम्हारा दात। इसे तो किसी टूथपेस्ट कम्पनी को विज्ञापन के लिए भेज

देना चाहिए।

पेशेट –अ अरे बाप रे मैं मर गया रे (रोते हुए) मै कही का नही रहा अरे डॉक्टर मेरे नीचे के दात मे दर्द था ओर तुमने ऊपर का दॉत निकाल दिया।

डॉक्टर अरे भैय्ये तू रोता काहे को है? एक दिन तो सारे ही दात निकलने ही है। दो मिनट मे ऊपर का दात निकल गया तो नीचे का दात निकालने मे दो घटे थाडे लगेगे ? चल लाईन मे लग जा थोडी देर वाद तेरा नीचे का दात भी वाहर कर देगे ।

पेशेट–अ भगवान वचाये ऐसे डॉक्टर से। लाईन मे लगवा–लगवाकर लगता है सारे दात तोड देगा ।

असिस्टेट यस अगला पेशेट ।

(एक महिला आती है)

महिला हैलो डॉक्टर साहव ।

डॉक्टर क्या बोलता हे हिलो डॉक्टर ? अरे तुम डाक्टर को हिलाने को बोलता है हम तुम्हारा एक–एक दात हिलाकर रख देगा । समझता है कि नही हम डॉक्टर दात सिह है दॉत सिह।

महिला नही डॉक्टर साहव मैं हिलो नही 'हैलो कर रही थी यानी कि आपको विश कर रही थी विश ।

डॉक्टर अरे हमको काहे विश करता है भगवान को विश कर ले भगवान को आखिर हमारे पास जा आया है यहा आने स पहले और जाने के बाद सव पेशेट भगवान को विश करता है वताओ क्या हुआ है तुम्हारे दातो को ?

महिला डॉक्टर साहब मेरे दातो का रग बडा पीला है इनको सफेद और चमकीला बना दीजिये।

डॉक्टर बस इतनी सी बात? भला इसमे क्या है ? हम अभी इनको सफेदझक और चमकीला किये देते है सुनो भई असिटेट अपना वो सफेद पोस्टर कलर और वार्निश व्रश लाना तो मेडम के सारे दात सफेद रग चोपड के झकास कर देते हैं।

महिला अरे रे ये क्या कर रहे हो डॉक्टर साहव ?

डॉक्टर — दातो को रग रहा हू मोतरमा।

महिला — मगर मेरे दात कोई किवाड या कागज थोडे ही है जो उस पर कलर कर रहे हो।

डॉक्टर — अरे मेडम जानती है ? ये डॉक्टर दातसिह का दत चिकित्सालय (दवाखाना) है। हम डॉक्टर ही नही चित्रकार भी है चलो बत्तीसी बताओ हम अभी ड्राईग खीचते है।

लडी — उई मर गई मै तो। आप लोग तो मेरे दातो का सत्यानाश कर देगे। अरे बाप रे मुझे ड्राईग नही करवानी। मुझे छोड दीजिए। भगवान के लिए छोड दीजिए। (डॉक्टर व असिस्टेट दोनो महिला के दात जबर्दस्ती पोतते है)

डॉक्टर — बस ! बस !! हमने फीस के लिए थोडे ही पकडा है। भगवान के लिए काहे छोड देगे बस ये हो गया काम। इतनी सी तो बात थी मेडम।

महिला — व ब ब

डॉक्टर — अब मुह खोल लीजिए ये जो पेट है इसका इफेक्ट तक तक रहेगा जब तक आप कुल्ला न कर ले। अगर आपको फिर बत्तीसी चमकाना हो तो हमारा पता भूलियेगा नही। बाय।

महिला — (झुझलाते हुए) पता तो मै जिदगी भर नही भूलूगी और देख लूगी एक–एक को।
(बडबडाते हुए प्रस्थान)

असिस्टेट — यस अगला पेशेट !
(एक पेशेट –पडित का प्रवेश)

पडितजी — जय श्री कृष्ण डॉक्टर साहब।

डॉक्टर — जय श्री कृष्ण भई जय श्री कृष्ण। कहिए भगवान को मेरा मतलब है हमे कैसे याद किया?

पडित — क्या बताये डॉक्टर साहब महाभोज की दालबाटी के लाले पड गये हैं। हर–हर शम्भो ! हर–हर शम्भो ! धन्नाभाई लल्लूमल सेठ मेजवान
के जन्म सस्कार पर भोजन
उधर कन्हैयालाल केणवनद

पत्नि की मृत्यु पर मृत्यभोज कराना चाहते हैं। इधर महाराज चालू चद अपनी बिटिया की शादी ने विवार सस्कार के पश्चात भोजन का निमत्रण द चुके है।

डॉक्टर — अरे पडित जी आपके पास भोजन के इतने निमत्रण हैं तो मेरा भेजा खाने यहा क्यो चले आए हो ?

पडित — खाने की समस्या ने ही तो हम आपके यहा आने को विवश किया है ।

डॉक्टर — क क क क्या मतलब है त त..त तो मेरा भ..भ भेजा ।

पडित — नही नहीं घबराईये नही डॉक्टर साहब । मेरी बत्तीसी मे न जाने क्या हुआ है कि मैं कुछ खा ही नहीं पाता मसूडे दुखने लग जाते हैं अदर का अदर और बाहर का बाहर आ जाता है।

डॉक्टर — अच्छा ! भला ऐसा कैसे? जरा मुह खोलना तो अभी मेटल डिटैक्टर स एग्जामिन करते हैं ।

पडित — ये क क्या कहा? मेडल देकर जामिन खाते हैं ।

डॉक्टर — (क्रोधित होकर) पडितजी क्या ज्यादा सुनते हैं ? अरे भाई हम इस यत्र से यह जाच करगे कि आपकी बत्तीसी म कहीं विदेशी ताकतो का हाथ तो नहीं है।

पडित — क्या बात कर रहे हैं डॉक्टर एकदम शुद्ध देशी घी खाने वाला स्वदेशी पडित हैं हम। विदेशी ताकत का तो सवाल ही नहीं उठता है।

डॉक्टर — आपको चलो मुह खोलो हम अभी देखते हैं कि चक्कर क्या है ? उ हू अपनी ये मोहन चोटी पीछे रखो। (डॉक्टर पडित की चोटी पकडता है)

पडित — अरे भाई मेरी चुटिया क्या खींचते हो ? बडी मेहनत के बाद तो ये इतनी बडी हुई है।

डॉक्टर — तो इस पर चुटिया बाध कर रखा ना। हा तो तुम्हारे मसूडो मे दर्द है।

(डाक्टर उसका मुह खोलकर देखता है व जोगी चिल्लाता है) थोडा और ऊपर करो (बत्तीसी गिरने की आवाज) गुडक अरे य क्या तुम्हारे तो ... दात है ये दुखगे नही तो और क्या होगा ...

शादीभोज बरबादी भोज दुनिया भर के भोजो मे मीठा खाते रहते हो इसलिए तुम्हारा ईलाज है आज से मिठाई खाना बिल्कुल बन्द ।

पडित — हम तुमसे ईलाज करवाने आये थे और तुम हमारी मिठाई बन्द करवा रहे हो ? अगर हम मिठाई खाना बन्द कर देगे तो बिचारे सारे हलवाई सडक पर आ जायेगे उनकी राजी रोटी का क्या होगा? और फिर सारे यजमान भूखे ही नही मर जायगे ? राम–राम ! भगवान बचाये ऐसे डाक्टर से।
(पडित प्रस्थान करता है)

डॉक्टर — (स्वय से ही) जाने कहा–कहा से चले आते है मोहन चोटी !

असिस्टेट — हा अगला मरीज।
(हकडूमल का प्रवेश)

हकडूमल — डा डा डा डॉक्टर साहब न न न नमस्ते !

डॉक्टर — नमस्ते भाई नमस्ते ! लगता है तुम्हारे दातो के साथ जीभ का भी ईलाज करना पडेगा । बोलो तुम्हारा नाम क्या है?

हकडूमल — हट हट हट

डॉक्टर — अरे मुझे हटा रहे हो ? मैं हट जाउगा तो क्या मेरा भूत ईलाज करेगा तुम्हारा?

हकडूमल — न न न म म मेरा न न न नाम हट हटकूमल है

डॉक्टर — अच्छा हटकूमल ! चलो तुम्हारे ये बडे–बडे दात ऊपर करो पहले तुम्हारी जुबान का चेकअप करते हैं।

हकडूमल — चच चचचेकअप न न न मेर दात छोटे करने है।

डॉक्टर — अच्छा दात छोटे करने है ? पहल बताना था न। असिटेट ! अपने कल्लूमल नाइ का उस्तारा तो लाना।

हकडूमल — उ उ उस्तरे से न न न नही !
(मियाभाई अपनी सीट से उठकर आ चुके होते है)

मिया भाई — वाह डॉक्टर साहब वाह ! क्या कमाल का

(दृश्य एक बैक के अन्दर शाखा कार्यालय का दृश्य। जहा काउटर व कुर्सियो पर बैठे बैककर्मी व प्रबधक स्पष्ट दिखाई देते हैं।)

पहला क्लर्क (दूसरे क्लर्क से) जय श्री कृष्ण राजा
दूसरा क्लर्क जय श्री कृष्ण–जय श्री कृष्ण
पहला क्लर्क क्या कल से यही बैठा हे भाई ?
दूसरा क्यो क्या बात हो गई ?
पहला एक्यूरेट दस बजे ब्राच मे आ गया आज ?
दूसरा नही यार वो तो क्या मै मिसेज को बस स्टेण्ड छोडने आया था जो वहा से सीधा ही ब्राच आ गया घर तो अब जाऊगा थोडा यहा सभाल के
पहला अच्छा तो फिर से भाभी मायके और तेरी पन्द्रह अगस्त ?
दूसरा वो बात नही है यार बच्चे तो मेरे भरोसे छोड कर गई हे
पहला देख वो आ रहा है अपना पुराना यार

(दृश्य एक बैक के अन्दर शाखा कार्यालय का दृश्य। जहा काउटर व कुर्सियो पर बैठे बैंककर्मी व प्रबधक स्पष्ट दिखाई देते है।)

पहला क्लर्क	(दूसरे क्लर्क से) जय श्री कृष्ण राजा
दूसरा क्लर्क	जय श्री कृष्ण--जय श्री कृष्ण
पहला क्लर्क	क्या कल से यही बैठा है भाई ?
दूसरा	क्यो क्या बात हो गई ?
पहला	एक्यूरेट दस बजे ब्राच मे आ गया आज ?
दूसरा	नही यार वो तो क्या मे मिसेज को बस स्टेण्ड छोडने आया था जो वहा से सीधा ही ब्राच आ गया घर तो अब जाऊगा थोडा यहा सभाल के
पहला	अच्छा तो फिर से भाभी मायके और तेरी पन्द्रह अगस्त ?
दूसरा	वो बात नही है यार बच्चे तो मेरे भरोसे छोड कर गई है
पहला	देख वो आ रहा है अपना पुराना यार

क्लर्क	ये क्या हे ? पेसे आप जमा करा रहे हो या मेनेजर साहब ? स्लीप पे साइन कौन करगा ?
ग्राहक	(अगूठा दिखाते हुए) साब मू तो थम्स अप हू
क्लर्क	थम्स अप हो चाहे लिम्का साइन तो आपका ही करने पडेगे (इसी बीच एक लडकी का प्रवेश)
क्लर्क	चल साइड म हो जा साइड मे हो जा
ग्राहक	बाऊजी मने वो अगूठो लगावारो दो नी हुकुम
क्लर्क	अरे सुबह–सुबह भेजा मत खराब कर वहा बेच पे जाकर बैठ जा आईये मेडम पधारिये व्हाट केन आई डू फोर यू ?
लडकी	(मुस्कराकर) ऐसा है मुझे मेरा रेकरिंग एकाउण्ट बद करवाकर पेमेंट लेना है
क्लर्क	अच्छा रेकरिंग एकाउण्ट है क्या रकरिंग का काउटर तो इधर है (खाली सीट की ओर सकेत करते हुए)
लडकी	लेकिन इस सीट पर तो
क्लर्क	कोई बात नही मैडम कोई बात नही आपका काम मे कर देता हू
लडकी	थक्यू सर
क्लर्क	आपको पहले कभी देखा नही ?
लडकी	एक्चुअली मेरे डेड ही पैसा जमा कराने आया करते है यू नो मुझे डेली कॉलेज जाना होता है।
क्लर्क	अच्छा–अच्छा बाय द वे आप कौनसे कॉलेज मे हे ?
लडकी	एम जी कॉलेज मे
क्लर्क	वहा तो मे भी पढा हुआ हू
लडकी	(हसकर) लेकिन वो तो गर्ल्स कॉलेज ह
क्लर्क	ओह म एम बी कॉलेज समझ गया था
मैनेजर	(क्लर्क के पास आकर) क्या बात हे ? मैडम को बहुत देर से खडा कर रखा है ओर भी कस्टमर ह भई ब्राच मे
क्लर्क	अभी निपटा रहा हू साब। काम तो काम की तरह ही होगा इनको खाता बद कराना है इनके साइन तो देख लो आप

शुभम विवाह भवन्तु

पात्र परिचय

पात्र	परिचय
पण्डित	शादी करवाने वाला स्थूलकाय पण्डित
कन्या की मा	एक प्रोढ महिला
कन्या का पिता	कन्या का भीरू पिता
मामा	कन्या का मामा
कन्या	एक 4–5 वर्षीया बालिका
वर	एक 9–10 वर्षीय बालक
वर का पिता	एक हस्ट–पुष्ट पोढ
वर के मित्र	9–10 वर्षीय चार बच्चे

विषय वस्तु बाल–विवाह की समस्या के निराकरण हेतु बाल–विवाह के आयोजन म स्वय पण्डित द्वारा सूत्रधार की भूमिका निभाते हुए बाल–विवाह न करने का सदेश देने वाली एक प्रेरक व रोचक एकाकी

(शादी के चौक का दृश्य मण्डप सजा हुआ है। लोगों की चहल पहल है पण्डित जी मण्डप पर विराजे हुए हैं।)

पण्डित जी — ऊँ विवाह भवन्तु शुभम विवाह भवन्तु शुभम विवाह भवन्तु । (आवाज देकर) कन्या के मा–बाप मण्डप पर पधार। (दोहराता है)
(कन्या के मा–बाप का प्रवेश)

कन्या की मा — (कन्या के बाप से) अरे मारेऊ आगे चालो नी।

बाप — हे भगवान ! आज सूरज पश्चिम म थोडी उगियो है। हमेशा तो आप मारेऊ आगे चाली हो आज भी चालो नी सा।

मा — ओ हो ! था नी हुदर सकोगा।

पण्डित जी — आईये ! आईये ! जल्दी आ जाईये ! हा बस यही ! यहा बैठिये। (कन्या के मा–बाप बैठते हैं)

प — ऊँ विवाह भवन्तु ! ये कन्या के मॉ–बाप भवन्तु ! हा। कन्या की मॉ अपना नाम बोलिये।

मा — (शरमाते हुए) मने सरम आये।

प — अरे भई सरम–वरम का यहा क्या काम है। यहा तो

सिर्फ धरम का नाम हे। जल्दी से अपना नाम बोलिये।

वाप — (वीच म ही) जी मारी पत्नी को नाम पेमा वाई ओर मारो नाम परभूलाल हे।

प — हू । ॐ विवाह भवन्तु । कन्या की मा पेमा बाई ओर वाप परभूलाल भवन्तु। हा । कन्या ओर वर को मण्डप पर बुलाया जाये।

(कन्या को उसके मामा आर वर को उसके पिता लेकर मण्डप पर आते ह कन्या मामा की गोदी मे है उम लगभग 4 वर्ष आर वर 9–10 साल का हे)

मामा — पण्डित जी ! ये कन्या है।

प — (झल्लाकर) अरे क्या मजाक वना रखा है ? मे क्या वच्चा हू जो ये गुडडे–गुडियो को लेकर आये हो ? चलो जल्दी जाओ और असली कन्या–वर को लेकर आआ।

मामा — जी यही वो कन्या है जिसका विवाह होने जा रहा है।

वर का पिता — जी यही वो वर है जिसरो इस कन्या के सात फरे पडवाने हैं।

प — शातम पाप ! शातम। ये कोई गुडडे–गुडिया का खेल समझा ह क्या ? अरे भई ! ये विवाह है विवाह । इन अनजाने छोटे नासमझ वच्चो को क्यो इसमे घसीट रहे हो ? इनकी तो अभी खेलने–खाने की उमर ह।

वर का पिता — सुनो पण्डित जी ! फटाफट ब्याह करावो हो या मू मेवाडी मे हमजाऊ। (वर का पिता अपनी वलिष्ठ वाजुए दिखाता है)

प — (घवराकर) अरे नही भाई नही । मे तो यू ही बात कर रहा था। आइये आप वर को यहा बेठा दीजिये। भई मुझे क्या फर्क पडता हे ? विवाह बच्चा का हो या वडे बूढो का। मुझे तो विवाह करवाने से मतलब हे। लाईये कन्या को भी यहा बैठा दीजिये।

(इस बीच वर बैठ जाता है लेकिन कन्या मामा की गोद मे जोर–जोर से रोने लगती है)

कन्या — (रोते हुए) ऊ ऊ ऊ । मन नींद आई री ह। मामा मन हुवाड़ दा।

मामा — अरे चुप वेई जा मारी गुनी । आज थारो ब्याव वेई रियो है। थन आज वर मिलेगा।

कन्या — (रोते–रोते) मने वर–भर काई नी छाये । मने तो फाइव स्टार चोकलेट खानी है।

वर का पिता — (चोकलेट देते हुए) तो लेवे नी मारी नानी । ले बेटा चोकलेट खाई ले। ओर ले अबे थू अटे बैठ जा अट।
(वर का पिता कन्या को मामा की गोदी से लेकर वर के पास बैठा देता है)

वर — (कन्या से चोकलेट छीनते हुए) मारी चोकलेट दे। बडी आई मारी चोकलेट खावा वाली।
(कन्या तेज रोने लगती है मामा उसे बुलाता है वर का पिता वर को थप्पड मारते हुए)

वर का पिता — मूरख ! विदणी उ चोकलेट छीन रियो है। अतरी भी अकल नी है कि आज थारी अणी मुन्नी ऊ शादी वेई री है आज थने ढग ऊ रेनो छावे।
(वर थप्पड खाते ही खडा हो जाता है)

वर — मु नी करूगा शादी–वादी। एक तो अणी–मारी फाइव स्टार चोकलेट खाई लीदी। वण्डे ऊपरे मू अणीऊ शादी करू ?

वर का पिता — अरे बेटा ! अच्छा बच्चा यू नी रोवे है। मू अबार थारे वास्ते दूसरी चोकलेट देवाई दूगा। ठीक है ?

वर — नी । मने तो याइस चोकलेट छावे है।

कन्या — (गुस्से मे चोकलेट की खाली पन्नी वर को देते हुए) ले थारी चोकलेट। मू तो अबे हुई री ऊ मम्मी री गोद म।
(वर चोकलेट की पन्नी लेकर ओर तेज रोता है कन्या अपनी मॉ की गोद मे बैठने के लिये अग्रसर होती है)

प (क्रोधित होकर) अरे भाइ ये क्या मजाक बना रखा है। हरे राम । हरे राम ।। जिन बच्चो को विवाह का अर्थ तक नही मालूम आप उन्हे विवाह के पवित्र सूत्र मे बाधना चाहते है ? हरे राम ! हर राम !! घोर कुभी पाक नरक के भागी।

वर का पिता ओ पण्डित जी ! हूणो ! ज्यादा अग्रेजी झाडवा री जरूरत नी हे। झट मतर भणो और पट ब्याह कराओ।

पण्डित जी बडी विचित्र बात हे ! जिन बच्चो को अपनी भरी हुई नाक साफ करनी नही आती उनका मै विवाह कराऊ ? जिस बच्चे को अपने पजामे का नाडा बाधना नही आता है उसका मे ब्याह करू ? ना भई ना । ऐसा अनर्थ मुझसे नही होगा। मे तो चला। (पण्डित जी अपना सामान बाधकर उठने को होते है)

वर का पिता (आवेश में) सुण पडत ! अबार तक तो मू सीधी तरह हू बात कर रियो हू। अबे लागे है कि सीधी आगली ऊ घी निकलगा नी।

प देखिये आप मेरा कुछ नही बिगाड सकते । अगर जबर्जस्ती की तो पुलिस को बुलवा दूगा। नाबालिग बच्चा का विवाह करना गेर कानूनी भी है और घोर सामाजिक अपराध भी। समझे ?

वर हा बापू हा । मू अबार ब्याह नी करूगा । पेला मू वडो वेई जाऊ भण लिख जाऊ पछे ब्याह करूगा।

प शाबाश बेटे । शाबाश !! तुमने ये बहुत समझदारी की बात कही है। अरे तुमसे तो तुम्हारा यह बेटा ज्यादा अकलमद है।

कन्या (अपनी माँ से) मम्मी ! मू भी अबार ब्याह नी करूगा। अबार तो मने बहुत तेज नीद आई री है। मने आपरी गोद मे हुवाई लो नी ।

माँ ठीक है वेटा ! हुई जा । थू हुई जा। (कन्या के बाप से) अरे हुनता हो मुन्नी रा बापू। आपने इस जल्दी पडरी ही ब्याह करावा री। चालो अबे ऊबा वो और

नानी ने तोको। (कन्या का पिता कन्या को गोद मे लेता हे लेकिन वर का पिता उसे रोकता है)

वर का पिता — रूको समधी साहब । आप मारे घर री बहू ने इसतर तोकने नी लेई जाइ सको हो । या शादी वेइनेइस रेगा । अगर असल मॉ रो दूध आप पीदा हे तो दी तकी जुबान पे काठा रेवा।

कन्या का पिता — अर म तो असल मा रो ही दूध पीदो है। पण मारी अणी नानी री तो अबार दूध पीवा री ही उमर है। हे भगवान । मारी आखिया अतरी देर बाद क्यो खुली। अगर मू पला ही अण्डे ब्याव री जल्दी नी मचातो तो आज या नोबत नी आती।

वर — पर अबे तो आपने अकल आई गी है। मारा बापू न तो अबार भी अकल नी आई हे।

वर का पिता — चोप नालायक । छोटा मुह बडी बात कर हे। थारा ब्याह अणी नानी ऊ वेइनेस रेगा।

वर — हा ! ठीक है बापू । म आपरी बात मानी । मू अणी नानी उइस ब्याह करूगा। पर अबार नी ।

वर का पिता — अबार नी तो जदी बूढो वेइजायेगा वदी ?

वर — नी बापू ! बूढो नी । जदी मू जवान वेइजाउगा वदी करूगा। अबार म् भण लिख लू। या नानी भी भण लिख ले । मू कमावा लाग जाउ वदी मू अणी नानी उइस ब्याव करूगा।

वर के मित्र — हा ! या अबार ब्याह नी करेगा। भण लिख ने बडो वेई जायेगा वण्डे बाद इस करेगा।

वधू की मा — हा ! वण्डे बाद ही मा ब्याह कराागा। वण्डे बाद ही मा ब्याह कराागा। (दोहराते हे वर का पिता सिर पकडकर बैठ जाता है)

प — विल्कुल ठीक ! विल्कुल ठीक ! अवयस्क बच्चा का विवाह तो म भी नही करवाउगा। (अपनी गठरी बाधता है) मै तो चला । ऊ विवाह न भवन्तु ! ऊ विवाह न भवन्तु ।

(पटाक्षेप)

राम नाम सत्य है

पात्र परिचय

पात्र	परिचय
राघव	30–35 वर्षीय युवक (पिता के निधन से शोकाकुल)
राघव की पत्नी	25–26 वर्षीया महिला
पण्डित जी	एक मोटा पेटू और चपल पुरुष
सोहन	18–20 वर्षीय नवयुवक जो राघव का चचेरा भाई है
श्यामू	18–20 वर्षीय नवयुवक
वृद्ध व्यक्ति	सीधा–सादा 60 वर्षीय ग्रामीण
अर्थी का शव	राघव का दिवगत 80 वर्षीय पिता
4 महिलाए	राघव की पत्नी के पीछे चलने वाली 4 ग्रामीण महिलाए

विषय वस्तु – मृत्यु भोज के अधविश्वास के प्रति जन–मानस को झकझोरने वाले इस नाटक मे एक वृद्ध ग्रामीण की मृत्यु के तत्काल बाद ही मृत्यु भोज को उकसाने वाले अधविश्वासी ग्रामीणो को मृत्यु भोज न करवाने का सदेश स्वय शव पुन जीवित होकर देता है जिसे सभी ग्रामीण स्वीकार कर लेते है।

(दृश्य   मच के बायी तरफ से चार व्यक्ति एक अर्थी उठाये हुए प्रवेश करते है। उनके पीछे कुछ व्यक्ति चलते है। सबसे आगे (अर्थी के आगे–आगे) राघव कण्डिया लिये रोते हुए चल रहा है)

शव उठाने वाले चारो व्यक्ति (रोते हुए रागमय)

"राम नाम सत्य है

पीछे आने वाले व्यक्ति

मुर्दा बडा मस्त है (दोहराते है)

(पीछे–पीछे पण्डितजी धान शव पर डालते हुए मन मे मन्त्रोच्चारण करते है) (पीछे चलने वाले व्यक्तियो मे सोहन व श्यामू रूककर धीरे–धीरे चलते हुए बात करते हैं) ("राम–नाम सत्य" है की ध्वनि धीमी होती हुई)

सोहन — काई रे भाया श्यामू । आज काले थू कणी दुनिया मे है ? अरे । थने मू बताऊ चेटक सिनेमा मे अमिताभ बच्चन री फिल्म लागी है – मिस्टर नटवर लाल ।

श्यामू — अरे हा यार । आज मारो भी फिल्म देखवा रो प्रोग्राम हो । पण काई करा यार । काकसा हुकुम रो असो सरगवास वीयो कि सब चौपट वेई गियो ।

सोहन — अरे भाया । यो भी तो सोच कि आपणा दो दा रा जीमण पक्का वीया। एक काकसा रे बारवा रो और दूजो तेरवा रो।

श्यामू — अरे जीमण रो हाको मती कर यार। हाल दाग ता वेड्जावा दे।

सोहन — हा । काई खबर । डोकरो मसाणा मे जाता–जाता पाछो जीवतो वेई जाये और जीमण धरियो रो धरियो रेई जाये।

(राम नाम सत्य है का स्वर तेज होता है – पण्डितजी आगे की ओर अगरसर होते है)

पण्डित जी — लीजिये विश्राम–स्थल आ गया है। अर्थी को यहीं रख दीजिये। आईये आप सभी भी कुछ देर विश्राम कर लीजिये।

(अर्थी एक तरफ रख दी जाती है सभी बैठने का उपक्रम करते है)

सोहन — ले भाया श्यामू । बैठक आई गी हे यानी आपाणे रेस्ट रो टाइम वेइ गियो हे । ले आई जा अटे बैठजा ।

श्यामू — ठीक है सोहनिया । चालो बैठ जावा । (दोनो पास–पास बैठ जाते है)

राघव — (शव के समीप पहुचकर रोते हुए) ह ह बापू – मारा बापू माणे छोडने परा गिया । बापू मू अनाथ वेईगियो बर्बाद वेईगियो ।

वृद्ध व्यक्ति — (दिलासा देते हुए) अरे बेटा । जो वेणो हो वो वेई गियो। अबे रोवा ऊ काई फायदो ? थारे बापू री उमर भी ता नब्बे ऊ उपरे पहुचगी ही।

सोहन — (रोते हुए) पण मा तो कटेराई नी रिया । काकसा हुकुम वेता तो कतराई काम बणारे आशीर्वाद हू वेई जाता ।

श्यामू — कतराई काम काई । मारे तो ब्याव रो प्रोग्राम ही चौपट वेई गियो। आगला हफता ही मारे ब्याव री

(दृश्य   मच के बायी तरफ से चार व्यक्ति एक उ
प्रवेश करते है। उनके पीछे कुछ व्यक्ति चलते है। स
के आगे–आगे) राघव कण्डिया लिये रोते हुए चल रह

शव उठाने वाले चारो व्यक्ति (राते हुए र
'राम नाम सत्य है

पीछे आने वाले व्यक्ति
मुर्दा बडा मस्त है (ए

(पीछे–पीछे पण्डितजी धान शव पर
करते है) (पीछे चलने वाले व्यक्तिय
धीरे–धीरे चलते हुए बात करते है)
धीमी होती हुई)

सोहन काई रे भाया <
है ? अरे । थने
बच्चा री फिल्म

लारे यो अन्याय आप क्यो की दो ? आप तो परा गिया पण माणे छोड गिया । अबे माणो काई वेगा ?

पण्डितजी — शात । बिटिया शात । भगवान के घर तो हम मे से सबको ही एक न एक दिन जाना है। फिर भला जाने वाले का इतना शोक क्यो ?

राघव — हा पण्डितजी । आप बिल्कुल सही फरमाई रिया हो।

पण्डितजी — अरे पुत्र ! हरे पुत्र ! हम तो सदैव सही ही फरमाते है। हरे राम । हरे श्याम । हम ब्रह्म–पुत्र ब्राम्हण जो ठहरे । शत–प्रतिशत विशुद्ध ब्राम्हण। अब तो हम यही कहेगे भाई कि अपने पिताजी की आत्मा की शाति की अच्छी व्यवस्था करना ।

राघव — बापू सा री आत्मा री शाति री व्यवस्था ? मा तो सारी उमर ही बापू सा हुकुम री सेवा की दी है।

राघव की पत्नी — हा मा तो वणारी सेवा सत्कार मे काई कमी नी राखी।

पण्डितजी — वो तो ठीक है बधुओ । किंतु मृत्यु के बाद तो दिवगत आत्मा से हमारा सीधा सबध अपनी आत्मा से हो जाता है। राधेश्याम। राधेश्याम। इसलिए वत्स। आत्मा से सबध जोडो   आत्मा से ।

आत्मा ऊ सबध किस्तर जुडे ?

राधेश्याम। राधेश्याम। तुम्हे आत्मा से सबध का नही ˈलूम। तब तो तुम्हे शास्त्रो का ज्ञान कराना ही ।।

।ञ। नी हुकुम। अणीउ माणे भी आत्मिक ज्ञान

आत्मिक ज्ञान अवश्य मिलेगा। स्वर्गवासी शाति हेतु और उसकी जीवित सतानो के लिए सहस्रो नर–नारियो को महाभोज ˥ आवश्यक है।

ںڈ। काई मतलब है ?

नी हमजो हो काई सा । महाभोज रो जीमण–जीमण ।

तारीख पक्की वी ही। पण अवे अगला हफता तो काई अगला वरस तक री गई । (रोते हुए) मू तो अवे कुवारो ही रेइ जाउगा । मू लाडी नी लाई पाउगा । (फूट-फूट कर रोता है)

राघव — (रोते हुए) (श्यामू से) अरे मारा भाई । ब्याव रा शौकीन । अरे थारा काकसा गुजरी गिया है और थने है कि ब्याव री पडी है। चाल वाटी री गाठ खोल और काकसा रे भोग लगा । (श्यामू अर्थी के सिर के पास से वाटी की पोटली मे से एक वाटी निकालता है और शव के सम्मुख नतमस्तक होता है)

श्यामू — (नतमस्तक होते हुए) धणी खमा काकसा हुकुम । आप सरग सिधार गिया पण मारो ब्याव रेई गियो । खैर। आप उपरेऊ मारे ब्याव री दुआ करजो । मू आपरे पगे लागू ।

सोहन — ठीक है श्यामिया ठीक है । ब्याव री दुआ थू एडवास मे ई लेले। पण यो तो पतो लागे कि काकसा रे सर्गवास म जीमण रो काई प्रोग्राम है।

राघव — (रोते हुए आवेश मे) जीमण रो प्रोग्राम ? अरे स्वर्गवास वेता देर नी वी और थने जीमण री पडी है ? हद करदी दी भाया थे हद करदी दी ।

वृद्ध व्यक्ति — अरे अण मे हद री काई वात है ? वारवा और तेरवा रो जीमण तो करणो ही है।
(यह सुनकर पण्डितजी सक्रिय हो उठते है इसी बीच धीरे-धीरे मच के दायी ओर से कुछ महिलाओ का प्रवेश)

पण्डित जी — सत्यम वदति । सत्यम वदति ।

राघव — (महिलाओ की तरफ देख कर) लो सब लुगाया भी आई गी । अबे आपा सब मिल बैठने फाइनल कर लागा ।

महिलाए — (एक साथ राग मे रोते-दोहराते हुए)
हे राम । परवाते-परवाते यो काई वेई गियो ।
प्राण उडी गिया और तन रई गियो ।

राघव की पत्नी — (आगे बढकर) (रोते हुए) अर बापू सा हुकुम। माणे

लारे यो अन्याय आप क्यो की दो ? आप तो परा गिया पण माणे छोड गिया । अबे माणो काई वेगा ?

पण्डितजी — शात ! बिटिया शात । भगवान के घर तो हम मे से सबको ही एक न एक दिन जाना है। फिर भला जाने वाले का इतना शोक क्यो ?

राघव — हा पण्डितजी । आप बिल्कुल सही फरमाई रिया हो।

पण्डितजी — अरे पुत्र ! हरे पुत्र ! हम तो सदैव सही ही फरमाते है। हरे राम । हरे श्याम । हम ब्रह्म–पुत्र ब्राम्हण जो ठहरे । शत–प्रतिशत विशुद्ध ब्राम्हण। अब तो हम यही कहेगे भाई कि अपने पिताजी की आत्मा की शाति की अच्छी व्यवस्था करना ।

राघव — बापू सा री आत्मा री शाति री व्यवस्था ? मा तो सारी उमर ही बापू सा हुकुम री सेवा की दी है।

राघव की पत्नी — हा मा तो वणारी सेवा सत्कार मे काई कमी नी राखी।

पण्डितजी — वो तो ठीक है वधुओ । किंतु मृत्यु के बाद तो दिवगत आत्मा से हमारा सीधा सबध अपनी आत्मा से हो जाता है। राधेश्याम। राधेश्याम। इसलिए वत्स। आत्मा से सबध जोडो आत्मा से ।

राघव — आत्मा ऊ सबध किस्तर जुडे ?

पण्डितजी — राधेश्याम। राधेश्याम। तुम्हे आत्मा से सबध का नही मालूम। तब तो तुम्हे शास्त्रो का ज्ञान कराना ही पडेगा।

वृद्ध व्यक्ति — हा कराओ नी हुकुम। अणीउ माणे भी आत्मिक ज्ञान मिलेगा।

पण्डितजी — अवश्य। आत्मिक ज्ञान अवश्य मिलेगा। स्वर्गवासी आत्मा की शाति हेतु और उसकी जीवित सतानो के धर्म–पुण्य के लिए सहस्रो नर–नारियो को महाभोज कराना अत्यत आवश्यक है।

वृद्ध व्यक्ति — महाभोज ? अण्डो काई मतलब है ?

सोहन — अरे । अतरोक नी हमजो हो काई सा । महाभोज रो मतलब होवे है जीमण–जीमण ।

पण्डितजी हा पुत्र । तुमने बिल्कुल ठीक समझा । (आह भरते हुए) हरे राम । हरे श्याम । अब तो कलियुग आ गया है – कलियुग। कोई नही समझता अब धर्म–कर्म ओर आत्मा की शाति की बात ।

वृद्ध व्यक्ति *सही बात है पण्डितजी । अबे वो जमाणो कटे रियो।*

पण्डितजी अरे भई । जमाना कही जाता थोडे ही ना है ? सवाल सिर्फ सच्ची श्रद्धा और भक्ति–भाव का है।

राघव सही बात है पण्डितजी । आप माणे उपरे पूरो विश्वास रखो । आप बापू सा हुकुम री आत्मा री शान्ति रे वास्ते जो काम बताओगा मा जरूर पूरो करागा । आप तो माणे आदेश करो ।

पण्डितजी *राधेश्याम । राधेश्याम । भला मैं क्या आदेश करू ?* यह तो तुम्हारी ही अन्तर्आत्मा की पुकार है। में तो बस इतना ही कहूगा कि पूरे प्रान्त नही जिला नही जात नही बस सिर्फ अपने गाव को भोजन तो करवा ही दो।

राघव की पत्नी *पूरे गाव को भोजन ? पण पण्डितजी । पूरा गाव री* आबादी तो कम उ कम 5–6 हजार वेगा।

राघव हा पण्डितजी । अतरा बडो खर्चो मा गरीब किस्तर कर पावागा ?

पण्डितजी यह तो अपनी–अपनी श्रद्धा की बात है बधु । *(रूककर) खैर । तुम इतना नही कर पाओ तो कम* से कम एक हजार एक व्यक्तियो को भोजन और एक सौ एक ब्राम्हणो को आज से तेरह दिन प्रतिदिन स्वादिष्ट भोजन तो करवा ही सकते हो।

राघव की पत्नी वाह पण्डितजी वाह । आप खुद री पेट–पूजा रो तो *घणो अच्छो इतजाम की दो है। (दु ख से)* एक तो मारा बापू सा हुकुम मारा ससुरा सा स्वर्ग सिधार गिया है और आपने स्वादिष्ट भाजन री पडी है ?

पण्डितजी हरे राम। हरे श्याम। (कुध होकर) मूर्खे ! तुम इस पण्डित का घोर अपमान कर रही हो। तुम्हे इसका *प्रायश्चित करना होगा। अन्यथा तुम ब्राम्हण के शाप* से कभी उभर नही पाओगी।

राघव — (पडित के पैर पडते हुए) नही पण्डितजी नही । आप असो मत करजो। या मारी लाडी तो अनपड–गवार है। अनजाना मे काई रो काई केईगी है। आप अण्डो बुरो मत मानो। बापू री शाति रे वास्ते आप जो हुकुम करोगा माणे मजूर है।

वृद्ध व्यक्ति — हा पण्डितजी । माणे मजूर है।

पण्डितजी — हा। यह हुई ना अक्ल की बात। तो फिर सुनो। अपने बापू के अतिम सस्कार के बाद अगले तेरह दिन तक मुझ जैसे विशुद्ध 101 ब्राम्हणो की आत्मा को तरह–तरह के स्वादिष्ट व्यजन खिला–खिला कर शात करना होगा ।

राघव — मने मजूर है पण्डितजी । मने मजूर है।

पण्डितजी — तथास्तु । इसके अलावा स्वर्गवासी आत्मा की शाति के लिए बारहवे और तेरहवे पर एक हजार एक नर–नारियो को प्रीति–भोज करवा कर दिवगत आत्मा को शात करना होगा।

(इसी बीच अर्थी मे से शव हिलने–डुलने लगता है सभी की नजर आश्चर्य से शव की तरफ)

(शव कफन उठाकर उठता है)

शव — (उठकर पुकारते हुए) राघव ! ओ बेटा राघव । कटे है मारा लाल ? मारे भडे तो आ बेटा ।

राघव — (खुशी से) बापू सा हुकुम । आप जीवता वेइगिया ! भगवान रो लाख–लाख शुक्र है। मू आपरे पगे लागू बापू। पगे लागू।

(सभी शव के समीप खुशी से जाते है)

सभी — (पण्डितजी के अलावा) मा आपरे धोग लागा । आप स्वर्ग उ पधारिया हो। आप माणे आशीर्वाद दो।

पण्डितजी — (शव से) दीर्घायु भव वत्स ! दीर्घायु भव ! देखा हमारे तपोबल का कमाल । तुम्हारे बापू पुन जीवित हो उठे।

शव — (खडे होकर पण्डित से) चोप धूर्त पण्डित । मारा भोला–भाला बाल–बच्चा ने ठगनो छावे है ?

पण्डितजी — (घबराकर) यह क्या कह रहे हो वत्स ? मै तो सदैव धर्म और कल्याण की बात करता हू ।

शव — (व्यग्य से) वाह पण्डित जी वाह । एक सौ एक ब्राम्हण ने स्वादिष्ट भोज करवाई ने आप धर्म और कल्याण करवाणो छाओ हो। एक हजार एक लोगा ने जीमण रो खरचो मारे छोटा उ करवाई ने आप महाकल्याण करवाणो छाओ हो ?

पण्डितजी — (घबराकर) यह क्या कह रहे हो वत्स । कही तुम यमलोक से भाग कर तो नही आये हो ?

शव — भाग कर नी पण्डितजी । मने तो इन्द्र भगवान खुद पृथ्वीलोक पर भेजियो है।

पण्डितजी — पर भला क्यो ? मेरा तो तुम बेडा ही गर्क किये दे रहे हो।

शव — अणी वास्ते ही तो भगवान मने भेजियो है। अगर मू अबार नी आतो तो मारा लाल राघव ने आप अतरा बडा जीमण रो खर्चो करवाई देता।

राघव की पत्नी — हा बापू सा हुकुम । आप ठीक केई रिया हो।

शव — और यो ठेरियो मेहनती और ईमानदार किसान । अण्डे पास अतरा पया कटे पडिया है जो जीमण रो खर्चो खुद उठाई लेता। इने तो आखिर महाजन उ कर्जो लेणो पडतो ।

राघव — तो काई वेइगियो बापू । आपरी आत्मा री शाति रे वास्ते तो मू काई भी कर सकू।

शव — हा । यो मू जाणू मारा बेटा यो मू जाणू । पण यो भी तो सोच कि अगर थू कर्ज रा बोझ उ लद जाएगा तो काई मारी आत्मा ने शाति मिल सकेगा। (रूककर) (सभी से) हूणो मारा भाई लोग । अणी कलियुग मे भगवान रो योइस सदेश हैं कि धर्म कल्याण ओर आत्मा री शाति सिर्फ जीमण जीवावा और मृत्यु–भोज करवा उ नी मिल सके है। अण्डे वास्ते जरूरत है मानव सेवा री।

राघव — पण मानव–सेवा मा किस्तर कर सका हा ?

शव — बेटा मानव–सेवा तो कई तरह उ वेवे है। आपणे गाव

मे वच्चा और वूढा लोगा रे वास्ते स्कूल अस्पताल खोलने धर्मशाला वणवाई ने लोगा रे दु ख–सुख मे काम आईने । जतरो खर्चो जीमण म करो वण्डो आधो खर्चो भी अगर असा कल्याण रा कामा म वेई जाये तो वणी उ आत्मा ने भी शाति मिले और परमात्मा भी खुश वेई जाये।

पण्डितजी — अति उत्तम ! अति उत्तम ! लेकिन यह तो बताओ वत्स कि भला तुम्हारे पुनर्जीवित होने का रहस्य क्या है ?

शव — आपने सावधान करनो ही मारे पुनर्जीवित वेवा रो रहस्य है पण्डित जी। आगे उ आप कदी गाव वाला उ मृत्यु भोज रे नाम पर उट पटाग खर्चो नी कराओगा । आप खुद महनत री खाओ और अणा लोगा ने मेहनत री खावा दो।

पण्डित जी — हा यही तो धर्म ग्रथो मे भी लिखा है। तुम धन्य हो वत्स तुमने हमारी आखे खोल दी । हम अव कान पकडकर और सौ उठक–वेठक लगाकर यह दृढ प्रतिज्ञा करते हैं कि अव कभी किसी को मृत्यु भोज के लिए नही उकसायेगे। हरे राम । हरे श्याम ।

(पण्डित दण्ड–वेठक लगाता है शव अर्थी की ओर अग्रसर होता है)

शव — अच्छा । अबे आप सब लोगा ने मारो प्रणाम । मू अबे चालू । भगवान मारो इतजार कर रिया वेगा । सबने मारो प्रणाम ।

(पुन समाधिस्थ होता है)

(सभी पुन शोक ग्रस्त होते हैं)

राघव — अरे ! बापू पाछा परागिया। माणे छोडने परागिया ।

(सभी उसके पीछे हो जाते है ओर मच पर सिर्फ पण्डितजी रह जाते है दण्ड–बैठक लगाते हुए वे कहते है –)

पण्डित जी — मृत्यु भोज – नही कराउगा ।
मृत्यु भोज – नही कराउगा ।

(इतने मे सोहन वापस लौट कर आता है और पण्डित जी से कहता है)

सोहन — अरे पण्डितजी । दाह–सस्कार तो चालने करवाई लो।

पण्डित जी — (चौककर) ओह । ये तो मै भूल ही गया था। चलो अभी चलते हैं। राधेश्याम । सीता राम । जप प्यारे नन्द राजा राम ।

(पटाक्षेप)